four public sector general insurance companies will result in huge advantages to the public sector and it will help the Government to invest more in social sector due to increased mobilization of people's savings and providing employment to the unemployed youths.

Therefore, I urge upon the Government to take effective steps for the merger of the four public sector general insurance companies in the national interest. Thank you.

DR. E.M. SUDARSANANATCHIAPPAN (Tamil Nadu): Sir, I associate myself with this issue.

SHRI RUDRA NARAYAN PANY (Orissa): Sir, I also associate myself with

the issue.

Need to set standards for the sign language for deaf in India

श्री जय प्रकाश अग्रवाल (राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र, दिल्ली) : महोदय, इस समय देश में लगभग 7 मिलियन बहरे लोग हैं, जिनमें से कुछ एक कान से नहीं सुन पाते, तो कुछ दोनों कानों से। इन बधिरों के लिए अब एक भारतीय चिह्न भाषा नहीं बनाई गयी हैं, जिस कारण ये बधिर अपने आपको समाज से अलग महसूस करते हैं, इसलिए आवश्यकता इस बात की हैं कि देश में एक भारतीय चिह्न भाषा होनी चाहिए, जिससे बधिर समाज से अपने आपको अलग महसूस न करें।

यह सत्य है कि भारतीय चिह्न भाषा एक सम्पूर्ण और अविभाजित भाषा हैं और इसके अपने चिह्न एंव व्याकरण है एंव यह मुख्यतः बधिरों के लिए ही हैं। विगत कई वर्षों से यह प्लान सरकार के विचाराधीन है, किन्तु अब तक इसको अन्तिम रूप नहीं दिया गया है।

अमरीका, इंगलैंड, आस्ट्रैलिया, मलेशिया, सिंगापुर, अर्जेटीना, बैल्जियम इत्यादि देशों में इन भाषाओं को मान्यता मिल चुकी हैं, इसलिए केन्द्र सरकार को चाहिए कि वह देश के कई मिलियन नागरिकों के कल्याण हेतु उक्त प्लान को अंतिम रूप देकर बधिरों को राहत दिलाए, जिससे बधिर लोग अपने को समाज से अलग महसूस न कर सकें।

मेरा सदन के माध्यम से सरकार से अनुरोध है कि वह बधिरों के हित में एक भारतीय चिह्न भाषा को शीघ्र अंतिम रूप प्रदान का कष्ट करें।

Need to promote Sanskrit language and upgrade Sampurnanand Sanskrit University to a Central University

श्री कलराज मिश्र (उत्तर प्रदेश): महोदय, संस्कृत भाषा सरकार की उपेक्षा के कारण इतिहास का हिस्सा बनती जा रही है। देश की सभ्यता, संस्कृति, संस्कार, रीति-रिवाज और ज्ञान को अपने में समेंटे यह भाषा विलुप्त होने के कगार पर पहुंच गयी हैं। रोजगार और रोटी के विपुल साधन उपलब्ध न करा पाने की वजह से नौजवान इस के अध्ययन से विमुख हो रहा है। विदेशों में अपनी पहचान बनी रही भाषा अपने ही देश में बेगानी हो गयी हैं।

पूरे देश में संस्कृत शिक्षा की तरफ छात्रों के घटते रूझान से आज देश में संस्कृत शिक्षा बदहाली के दौर से गुजर रही हैं। संस्कृत भाषा के अध्ययन के लिए नेपाल, भूटान, तिब्बत, मॉरीशस सहित कई देशों के विद्याथी आ रहें हैं, किन्तु हमारे देश में विद्याथियों के अभाव में कई संस्थानों को इस की पढ़ाई बंद करनी पड़ी है। संस्कृत भाषा के प्रचार-प्रसार में लगा संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय आज बजट के अभाव में घाटे में चल रहा हैं और केन्द्रीय विश्वविद्यालय का दर्जा पाने की बाट जोह रहा हैं। दिल्ली के करीब 28 कालेजों में संस्कृत आर्नस की पढ़ाई होती हैं। इस वर्ष 17 कालेजों में सीटें नहीं भरी जा सकी, कहीं-कहीं तो आधी से भी कम सीटें भरी हैं। ऑनर्स की पढ़ाई होती हैं। इस वर्ष 17कालेजों में सीटें नहीं भर जा सकी, कहीं –कहीं तो आधी से भी कम सीटें भरी हैं। आर्नस के अलावा बी.ए. प्रोग्राम में संस्कृत विषय कई कालेजों में अघोषित रूप से बंद हो गए हैं। आज आवश्यकता है इस ओर विशेष ध्यान देकर इसे रोजगार के लिहाज से कंप्यूटर, योग, आयुर्वेद और वास्तुशास्त्र से जोड़ने की। महोदय, देश की अस्मिता और संस्कृति से जुड़े इस गंभीर विषय पर चिंता किए जाने की आवश्यकता है। अतः मैं सदन के माध्यम से सरकार से मांग करता हूं कि संस्कृत शिक्षा में व्यापक सुधार हों, इसे रोजगारपरक बनाया जाए और संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यायल को केन्द्रीय विश्वविद्यालय का दर्जा दिया जाए।

श्री श्रीगोपाल व्यास (छत्तीसगढ़): महोदय, मैं स्वंय को इस विशेष उल्लेख से संबद्ध करता हूं।

श्री रूद्रनारायण पाणि (उड़ीसा) : मैं भी स्वंय को संबद्ध करता हूं।

श्री भागीरथी माझी (उड़ीसा): मैं भी स्वंय को संबद्ध करता हूं।

SHRIMATI JAYA BACHCHAN (Uttar Pradesh): Sir, I also associate myself with this Special Mention.

SHRI SHARAD ANANTRAO JOSHI (Maharashtra): Sir, I also associate myself with it.

MR. DEPUTY CHAIRMAN. The whole House associates itself with it.

The House is adjourned to meet at 2.00 p.m.

The House then adjourned at forty-six minutes past twelve of the clock.

The House reassembled after lunch at two of the clock, MR. DEPUTY CHAIRMAN in the Chair.

Re. Clashes in Kolkata

श्री दिनेश त्रिवेदी (पश्चिमी बंगाल) : सर, कोलकाता जल रहा हैं, माइनोरिटी पर गोली चलाई जा रही हैं। ...(**व्यवधान**)... सर, कोलकाता में आर्मी बुलाई जा रही हैं। होम मिनिस्टर साहब को इसी वक्त यहां आकर जानकारी देनी चाहिए। ...(**व्यवधान**)... कोलकाता जल रहा हैं। किसी का परिवार वहां सुरक्षित नहीं हैं। ...(**व्यवधान**)... माइनोरिटी पर गोली चलाई जा रही हैं। ...(**व्यवधान**)... हमारा परिवार सुरक्षित नहीं हैं। ...(**व्यवधान**)...

श्री उपसभापति : ठीक हैं, इस पर कल डिसकस कर रहें हैं। ...(**व्यवधान**)...

श्री दिनेश त्रिवेदी : सर, होम मिनिस्टर साहब को बुलवाइए। ...(**व्यवधान**)...The Home Minister must come and tell us now. *(Interruptions)* Government must react. Please, watch it on television. *(Interruptions)*

श्री एस.एस. अहलुवालिया (झारखंड) : सर, पश्चिमी बंगाल के एक मजदूर समुदाय ने प्रोसेशन निकाला हैं। उस प्रोसेशन के ऊपर गोली चल रही है और यह कोलकाता मे, कैपिटल में हो रहा हैं। ...(**व्यवधान**)...

श्री दिनेश त्रिवेदी : सर, मुसलमान के ऊपर गोली चलाई जा रही हैं। आज आलॅ इंडिया माइनोरिटी फोरम जो सड़क पर निकला हैं, उस पर पुलिस ने ...(**व्यवधान**)... सर, टेलीविजन पर दिखाया जा रहा है। ...(**व्यवधान**)... होम मिनिस्टर आकर बतांए, कुछ बयान दें। ...(**व्यवधान**)... आर्मी बुलाई गई हैं। कोलकाता जल रहा है। कोलकाता में कोई सुरक्षित नहीं हैं। ...(**व्यवधान**)... बंगाल जल रहा है। ...(**व्यवधान**)...

श्री उपसभापति : ठीक हैं, आपने अपना पांइट रख दिया है। ...(**व्यवधान**)...

श्री एस. एस. अहलुवालिया : सर, जो कुछ टेलीविजन पर दिखाया जा रहा है, क्या वह सत्य हैं ? जब पार्लियामेंट चल रही हैं, तो गवर्नमेंट को स्वतः आकर ही संसद को बताना चाहिए कि वहां पर क्या हो रहा है ?

श्री दिनेश त्रिवेदी : सर, होम मिनिस्टर यहां आएं और बयान दें कि वहां पर क्या हो रहा है ? ...(**व्यवधान**)...

श्री एस.एस. अहलुवालिया : सर, गृह मंत्री को स्वतः यहां आकर बताना चाहिए। ...(**व्यवधान**)...

श्री दिनेश त्रिवेदी : सर, हमारा कोई किसी का भी परिवार वहां सुरक्षित नहीं हैं। माइनोरिटी पर गोली बरसाई जा रही हैं। यह आज अभी टेलीविजन पर दिखा रहे हैं। इसे पूरा देश देख रहा है। संसद चुप नहीं रह सकता हैं। ...(**व्यवधान**)...

श्री उपसभापति : आपने जो कहना था, वह कह लिया। अब देखिए, ...(**व्यवधान**)...